**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 198-200**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

# दक्षिण चीन सागर समस्या एवं सुझाव

**डॉ० अजय कुमार पाण्डेय**
एसोसिएट प्रोफेसर– रक्षा एवं स्त्रात्यजिक अध्ययन विभाग, श्री मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया (उ0प्र0) भारत

**Received-16.03.2025, Revised-22.03.2025 Accepted-30.03.2025 E-mail : aaryvart2013@gmail.com**

***सारांशः दक्षिण चीन सागर में एकाधिपत्य अमेरिका–चीन द्वारा दावा करने से यह एक बहुराष्ट्रीय संघर्ष हो गया है। इसका एक महत्वपूर्ण पहलू भारत के लिये यह भी है कि भारत की सनातन आध्यात्मिक परम्परा में दक्षिण–पूर्व आग्नेय कोण जहाँ से पूर्ण उर्जस्विता प्राप्त रसोई कक्ष इसी दिशा में संचालित कर घर के समस्त सदस्य की उदरपूर्ति, स्वस्थ्य जीवन की अपेक्षा की जाती है। इस उर्जस्वित क्षेत्र पर एकाधिपत्य स्थापित करने से तात्पर्य विश्व के राष्ट्रों पर आधिपत्य स्थापित किया जा सकता है।***

***कुंजीभूत शब्द– सागर में एकाधिपत्य, सम्प्रभुता, चीन का भू–सीमा विवाद, भू–स्त्रातजी, नौवहन, सीमा विवाद, द्वीप, उदरपूर्ति***

दक्षिण चीन सागर में चीनी पदचिन्ह व सम्प्रभुता का दावा ने संघर्ष /तनाव को बढ़ाने के साथ ही सम्पूर्ण क्षेत्र में नौशक्ति को सशक्त व बीजिंग व्यवसायिक निवेश ने तटीय राष्ट्र के साथ ही समस्त राष्ट्रों को सुसुप्तावस्था से जाग्रतवस्था में लाकर सक्रिय कर दिया है। शोध के अन्तर्गत विचारणीय है कि चीन का भू–सीमा विवाद के साथ नौ सीमा विवाद समस्त जुड़े राष्ट्र से है क्यों ? जुड़े सीमा से राष्ट्र दोषपूर्ण या एकल चीन/ भू–स्त्रातजिक विश्लेषण के पश्चात् ही स्पष्ट किया जा सकता है। विश्व के व्यस्ततम नौवहन अर्थजगत का प्रवेश द्वारा उन्नतिशील/समृद्धत्तम पथ है जिसकी भू–स्त्रातजी इस प्रकार है।

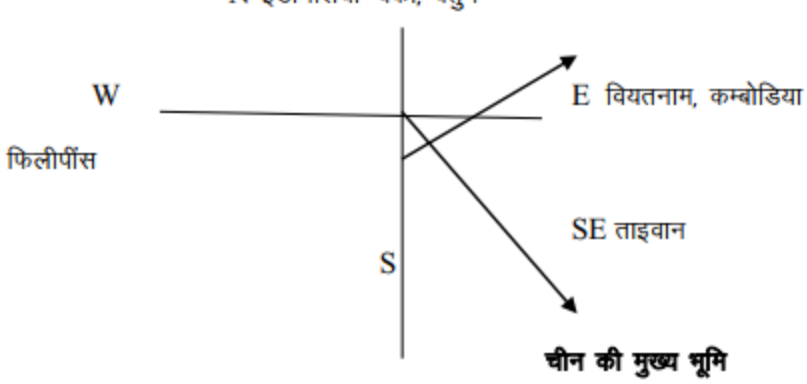


**चीन की मुख्य भूमि**

- पूर्वीतट पर वियतनाम व कम्बोडिया का स्पर्शण, पश्चिम में फिलीपींस, उत्तरी क्षेत्र में इंडोनेशिया के बंका व बैतुंगद्वीप।
- सिंगापुर से लेकर ताइवान की खाड़ी तक 3.5 मिलियन वर्ग में विस्तारित सीमान्त सागर चीन के दक्षिण में स्थित है।
- दक्षिण पूर्वी क्षेत्र पर ताइवान की दावेदारी, चीन का मुख्य भाग दक्षिण में स्थित जिसके आस–पास इंडोनेशिया का करिमाता, मल्लका, फारमोसा, जलडमरूमध्य मलय व सुमात्रा प्रायद्वीप है।
- एशिया के दक्षिण–पूर्व में स्थित प्रशान्त महासागर के पश्चिमी किनारे को स्पर्श करता हुआ दक्षिण चीन सागर है।
- जिस प्रकार से हिन्दुस्तान (भारत) के नाम पर हिन्द महासागर, ठीक इसी प्रकार से चीन के नाम पर दक्षिण चीन सागर है।

भारत दक्षिण चीन सागर विवाद का पक्षधर नहीं है, आसियान राष्ट्र के सम्बन्ध मधुर व सम्यक विकास का अनुयायी है। यद्यपि सुरक्षा में सुधार नौवहन हेतु प्रत्येक राष्ट्र का अधिकार है। भारत प्रशान्त की अवधारणा एवं महत्वपूर्ण दस्तावेज के परिप्रेक्ष्य में दक्षिण चीन सागर विवाद पर कुछ बिन्दु निम्नवत है :

1. दक्षिण चीन सागर क्षेत्रीय ऊर्जा सुरक्षा, व्यापार, वाणिज्य के संचार के लिये शान्ति व स्थिरता आवश्यक है।
2. नेविगेशन एवं ओंवर फ्लाइट की स्वतंत्रता की वैधानिकता पर निष्ठा पूर्वक अमल।
3. भारत, अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया सहित सम्पूर्ण राष्ट्र की सामंजस्यता एवं विवाद का समाधान संवाद द्वारा ।
4. सम्प्रभु एवं क्षेत्रीय अखण्डता कानून, पर्यावरण/ पारिस्थितिकी संरक्षा के साथ भारत–प्रशान्त क्षेत्र में भारत सं0रा0 की उपस्थिति की दृढ़ता पर सहमत।
5. सामुद्रिक सुरक्षा हेतु भारत–जापान के संयुक्त तत्वावधान में परामर्श एवं सम्यक विकास के लिये प्रत्येक सम्भव निरन्तर प्रयास।

दक्षिण चीन सागर का नाम ही अपने आप में ऐतिहासिक है क्योंकि नाम ही विवाद है। ऐतिहासिक साक्ष्यनुरूप दक्षिण चीन सागर के लिये प्रथम चीनी नाम नानफांग था। पिनयिन नानफांग होई शाब्दिक रूप से दक्षिण चीन सागर, झोउ शासकों की हॉक बिल समुद्री कछुओं की श्रद्धांजलि दी गयी थी। क्लासिक ऑफ पोएट जूओ झुआन लेकिन नान है। नान है तीन अन्य समुद्र चार प्रमुख दिशाओं में एक। ऐतिहासिक बिन्दु स्मरणीय विश्लेषित निम्नानुसार है:

- 22 मई, 1944 ई0–जापानी गन बोट हाशिदते को अमेरिकी पनडुब्बी USS पिकुडा ने दक्षिण चीन सागर में प्रतास द्वीप के पास टारपीडो से उड़ा दिया। जिसमें कमांडिंग अधिकारी मारा गया।
- मई 1945 ई0–जापानी नौ सेना द्वारा मौसम स्टेशन व वायरलेस चौकी के रूप में विकसित प्रतास द्वीप पर किया था। 29 मई 1945 ई0–पूर्वाहन भारतीय समयानुसार 10:22 बजे पनडुब्बी USS ब्लूगिल से आस्ट्रेलियाई कमाण्डो एवं अमेरिकी नौ सेना कर्मियों से युक्त लैंडिंग पार्टी अमेरिकी ध्वज फहराने के साथ संयुक्त राज्य क्षेत्र घोषित व नाम ब्लूगिल द्वीप रखा। लैडिंग

**अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक**

पार्टी ने रेडियो टॉवर, मौसम स्टेशन, गोला बारूद ढेर इमारतें नष्ट के बाद भी कोई प्रतिरोध नहीं हुआ क्योंकि ब्लूगिल के पहुंचने से पूर्व जापानी द्वीप छोड़ चुके थे।

- 12 सितम्बर 1946 ई0 – चीन गणराज्य की नौ सेना द्वारा प्रतास द्वीप पर अधिकार व सेना की तैनाती।
- 06 जून 1949 ई0–ROC ने हैनान विशेष प्रशासनिक जिला का गठन।
- 1954 नवम्बर–वरिष्ठ ROC राजनीतिज्ञ चियांग चिंग कुओ का द्वीप निरीक्षण।




दक्षिण–चीन सागर का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को विचारकों ने निम्नांकित सार तत्व के रूप में उल्लिखित किया है :

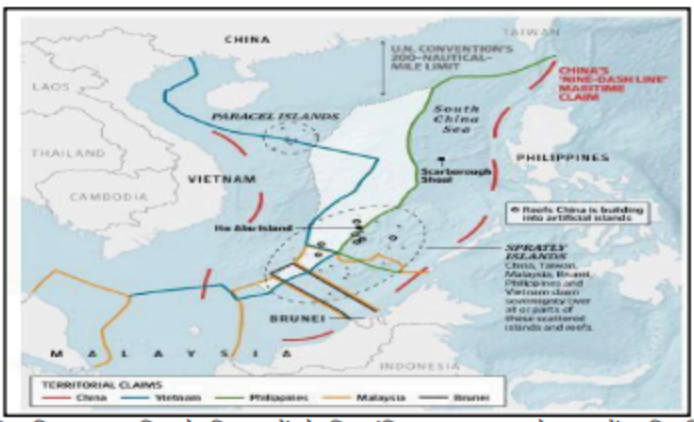

1. ऐतिहासिक रूप से जल या उनके संसाधनों पर अनन्य नियंत्रण का प्रयोग का इतिहास की प्राचीनता है।
2. चीनः विवाद राष्ट्रीय सम्प्रभुता से सम्बन्धित है जो न्यायाधिकरण के अधिकार क्षेत्र से बाहर है।
3. मुद्दाः चीन का 200 समुद्री मील के अनन्य आर्थिक क्षेत्रों या EEZ पर दावा दीर्घकालिक है।
4. न्यायाधिकरण : स्प्रैटली द्वीप ने कोई भी आउटक्रॉप मानव निवास को बनाये नहीं रख सकता है, इसलिए वे द्वीप नहीं हो सकते हैं और EEZ के लिए योग्य नहीं हैं।

दक्षिण चीन सागर की मुख्य विशेषता एक गहरा समचतुर्भुज बेसिन पूर्वी भाग में है। दक्षिण व उत्तर–पश्चिम में बेसिन के अन्दर चट्टान जड़ित शेल खड़ी है। बेसिन के पूर्वी किनारे पर महाद्वीपीय शेल्फ लूजोंन, पलावन के फिलीपीन के पास तीव्रता से गिरता तथा बाद वाले द्वीप के पास पलावन गर्त बनता है। बेसिन के उत्तर–पश्चिम मुख्य भूमि की ओर एक चौड़ी उथली शेल्फ जिसमें टोकिन खाड़ी, ताइवान के बड़े द्वीप, जलडमरूमध्य हैनान है सुंगशेल्फ विश्व की सबसे बड़ी सेल्फ जलमग्न घाटियों द्वारा योगदान किये गये तटीय तलछट से ढका है। मिट्टी का आन्तरिक क्षेत्र मेकांग व रेड रिवर डेल्टा के पास महाद्वीपीय शेल्फ की विशेषता है। दक्षिण चीन सागर के गहरे भाग की तलछट मुख्य रूप से मिट्टी से निर्मित ज्वालामुखीय राख है जो परतों में विभाजित पूर्वी इंडीज में बड़े ज्वालामुखी विस्फोट से उत्पन्न हुये थे। विशेषतः वर्ष 1883 ई0 में क्राकाटीआ के व्यापक विस्फोट के दौरान राख को हवा व धाराओं द्वारा पूरे क्षेत्र में विस्तारित किया गया।




क्राकाटोआ (क्राकाटोआ) ज्वालामुखी

**सामरिक महत्व–** यह सागर अपने स्थान के लिए अत्यधिक सामरिक महत्व रखता है क्योंकि यह हिन्दमहासागर–प्रशान्त महासागर के मध्य की कड़ी है। हिन्दमहासागर में डिएगोगार्सिया एक महत्वपूर्ण सामरिक स्थल होने से आवागमन अनिवार्य है। विविध राष्ट्र के यहाँ नौ सैन्य अड्डे है जहाँ पहुंचने के लिए दो सागर के मध्य दक्षिण चीन सागर से गुजरना होगा यदि कोई भी राष्ट्र या चीन दिवार के रूप में खड़ा होता है तो उसे गिराने के पश्चात् ही गंतव्य तक पहुंचना सम्भव होगा। संक्षिप्तांश निम्नानुसार है :

- दक्षिण चीन सागर दक्षिण–पूर्व एशिया में पश्चिमी प्रशान्त महासागर की एक शाखा है।
- चीन के दक्षिण, वियतनाम के पूरब, दक्षिण में फिलीपींस के पश्चिम में बोर्नियो द्वीप के उत्तर में है।
- ताइवान–जलडमरूमध्य द्वारा पूर्वी चीन सागर व लुजोन जल डमरूमध्य द्वारा फिलीपीन सागर से जुड़ा है।
- सीमावर्ती राज्य क्षेत्र उत्तर से दक्षिणावर्त पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना, रिपलब्लिक ऑफ चाइना (ताइवान) फिलीपींस, मलेशिया, ब्रुनेई, इण्डोनेशिया, सिंगापुर, वियतनाम।
- विकास व व्यापार पर सं0 रा0 सम्मेलन (UNCTAD) के अनुसार–वैश्विक नौवहन का एक तिहाई भाग। इसके माध्यम से गुजरता खरबों का व्यवसाय व राजनीतिक जल निकाय बनाता है।

**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

**सार्वजनिक भवन–** दक्षिण चीन सागर की महत्ता में सार्वजनिक भवन भी एक स्थान रखता है जो द्वीप पर निर्मित है। सैनिकों को विविध प्रकार की जानकारी व समय के सदुपयोग के लिये दो हजार से अधिक पुस्तक वाली विकसित सुव्यवस्थित पुस्तकालय भवन निर्मित है।

अस्पताल, 2004

67 सैन्य डाकघर (Post Office) है। परिवहन व संचार मंत्रालय ने 2 टिकट के एक सेट के रूप में दक्षिण चीन सागर द्वीप मानचित्र वाला डाक टिकट जारी किया गया है।

'दक्षिण चीन सागर रक्षा' शिलालेख राष्ट्रीय पत्थर की पट्टिका से निर्मित व स्थापित की गई जो 5 डालर के टिकट पर मुद्रित हुई थी, इसके साथ ही राष्ट्रीय पत्थर की पट्टिका पर ही 'दक्षिण चीन सागर की रक्षा करें' जो 17 डालर के टिकट पर मुद्रित स्थापित किया गया है। दक्षिण चीन सागर पृष्ठभूमि में दक्षिण चीन तटरेखा, ताइवान, नीले हल्के आकाशदीप व समुद्र के साथ हैनान द्वीप जब ROC ने पहली बार दक्षिण चीन सागर की थीम के डाक टिकट जारी कर इसका महत्व एवं शोभा बढ़ा दिया।

इसके अतिरिक्त दक्षिण चीन सागर में विश्व राष्ट्रों की दिलचस्पी व दावे इसकी अमूल्यता को ही वर्णित करते है। शोध/अनुसंधान की महत्ता तब बढ़ जाती है जब शोधार्थी/शोधार्थिनी को शोध निर्देशक के साथ शोध क्षेत्र स्थान तक पहुंचा जाए ऐसा विचार विशिष्ट विद्वत जन का है किन्तु समकालीन परिवेश में विज्ञान व प्रविधा की प्रगति ने विविध तकनीकी साधनों द्वारा शोध क्षेत्र स्थान की तस्वीर इस प्रकार दर्शित होती है कि हम जैसे शोधार्थी की यह अनुभूति होती है कि सचमुच हम पहुंच गये हैं। मानचित्र एक राष्ट्र या किसी भी राष्ट्र के राजनीति की सत्यता का सम्पुट है। जिस पर शीघ्र ही आवश्यक कठोर कदम उठाना अनिवार्य आवश्यकता है।

**सुझाव–** दक्षिण चीन सागर विवाद समस्या के समाधान के लिए आवश्यक सुझाव निम्नानुसार है। वैश्विक विवाद के कारण विश्व राष्ट्र की सहभागिता निष्ठापूर्वक संकल्प से युक्त दृढ़तापरक होना चाहिए, क्योंकि समस्या के समाधान में शक्ति की महत्ता रही है।

1. पारदर्शिता
2. कोर कमेटी
3. संवैधानिक परिवर्तन
4. त्वरित निर्णय/निस्तारण
5. त्रैयवार्षिक चक्रीय संगठन
6. पाक्षिक कार्यवाही
7. समायोजित व्यवस्था

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. दृष्टि
2. अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एवं राजनीति.. फडियां एवं फडियां
3. भारतीय विदेश नीति.. जे.एन. दीक्षित।
4. समसामयिकी।
5. गूगल.कॉम
6. हिंदुस्तान नवम्बर 2024
7. डिफेंस मॉनिटर ब्यूरो नई दिल्ली दिसंबर 2024–जनवरी 2025

*****